पूर्वोत्तर प्रभा
(सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक शोध पत्रिका)
Journal Home Page: **http://supp.cus.ac.in/**

विनोबा भावे का अंतिम उद्गार : खादी-मिशन

पंकज कुमार सिंह
पोस्ट-डॉक्टरल फेलो (ICPR, New Delhi)
गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
ईमेल: gandhikhadi@gmail.com

शोध सारांश: महात्मा गांधी के जाने के बाद 'खादी' कुछ समय अपने मूल स्वरूप में चलता रहा किंतु 1956 में 'खादी और ग्रामोद्योग आयोग' बना, जिसने खादी जगत को आर्थिक सहायता दी जिससे रोजगार तेजी से बढ़ा। समय के साथ यह आर्थिक सहयोग 'खादी और ग्रामोद्योग आयोग' और खादी संस्थानों में भ्रष्टाचार का बीज बो दिया। इससे खादी संस्थानों की स्थिति खराब होने लगी इस पर विनोबा भावे ने खादी विचार को आगे बढ़ाने और गांधी के सपनों को पूरा करने हेतु 'खादी-मिशन' की स्थापना 2 अक्टूबर, 1981 में की तब से 'खादी-मिशन' उस दायित्व को पूरा करने की कोशिश कर रहा है। खादी-मिशन की स्थापना पवनार आश्रम की एक सभा में हुई, जो आज भी स्वतंत्र व अपंजीकृत संस्था है। बावजूद इसके, पूरे देश की खादी संस्थायें इसके बैनर तले एक हैं। यह शोध पत्र खादी मिशन के उद्देश्यों व कार्यों का विश्लेषण करता है।

सूचक शब्द: गांधी, विनोबा, खादी-मिशन, आयोग

मूल लेख

यूँ तो खादी-मिशन अपने नैतिक बल से देश की खादी संस्थानों को 42 वर्षों से एकजुट किया हुआ है। इसके बैनर तले खादी संस्थाएँ खादी क्षेत्र की समस्याओं को दूर करने के लिए आपसी सहमति से कार्य करती हैं। खादी-मिशन व खादी संस्थाओं का मानना है कि खादी संस्थाओं की कमजोर आर्थिक स्थिति का कारण 'खादी और

ग्रामोद्योग आयोग, मुम्बई' है, जो सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय, भारत सरकार का एक अंग है। इसके लिए खादी-मिशन 'खादी और ग्रामोद्योग आयोग' से पत्राचार व सत्याग्रह कर रहा है। सत्याग्रह को और अधिक पुष्ट बनाने के लिए वर्ष 2010 से 'खादी रक्षा अभियान' शुरू किया है, जो अभी तक जारी है। दर प्रतिवर्ष खादी-सभा में अनेकानेक बिल पास होता है, जिसे खादी संस्थानों को अपने स्तर से क्रियान्वयन कराना होता है। इस सभा में कभी-कभी खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग के अध्यक्ष तक आते हैं अब धीरे-धीरे आयोग के प्रतिनिधि तक का आना भी बंद हो गया है, किंतु खादी-सभा अपने काम में आज भी लगी है।

उद्देश्य

1. खादी-मिशन के उद्देशयों का विश्लेषण करना।
2. खादी-मिशन के कार्यों का विश्लेषण करना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र गुणात्मक है, जो मुख्यतः द्वितीयक श्रोत पर आधारित है। शोधार्थी खादी मिशन द्वारा आयोजीत चार खादी-सभा में गया है। इसके साथ ही समय-समय पर खादी जगत के लोगों से साक्षात्कार करता रहता है, इस संदर्भ में खादी और ग्रामोद्योग आयोग के कार्यालयों का भी अवलोकन एवं अधिकारियों से बात चित किया है जिसका निचोड़ अपने विश्लेषण में शामिल किया है।

गांधी 'खादी' को सामाजिक और आर्थिक समानता के प्रतीक एवं अहिंसक क्रांति का आधार मानते थे। उनके लिए खादी केवल कपड़ा या हस्तकला का नमूना मात्र नहीं था। स्वावलंबी और शोषणरहित जीवन बनाने का वह माध्यम था। यह ग्रामीण समाज को सशक्त करने का आधार बिन्दु है, जिस भारत के गांव में आज भी मौसमी बेरोजगारी और विस्थापन का तांता टूटा नहीं उसके लिए चरखा कारगर सिद्ध होगा। बहुत दु:ख के साथ यह देखने को मिलता है कि खादी का विकास यानी रोजगार का अवसर जिस स्तर से बढ़ना चाहिए वह नहीं हो पाया। इस संदर्भ में विनोबा की दृष्टि उचित ही थी

कि 'खादी और ग्रामोद्योग आयोग' के कार्य की पद्धति में परिवर्तन कर मिशन की भावना लाई जाए। इसलिए पवनार, वर्धा में 9 सितंबर, 1981 को विनोबा भावे ने खादी-जन से 'खादी-मिशन' की स्थापना के लिए कहा, जिसमें मुख्य रूप से निम्नलिखित बातें थीं -

क. "निर्भय, निर्वैर, निष्पक्ष बनो और पॉलिटिक्स में मत पड़ो। (विनोबा, 1981)"

पॉलिटिक्स में मत पड़ो वाली बात को खादी-जन अक्षरश: मानते हैं। किंतु अध्ययन से यह सामने आता है कि खादी का विस्तार कांग्रेस के मार्फत बहुत हुआ, जो एक राजनैतिक संगठन था। एक समय तो ऐसा हुआ कि गांधी जी के आह्वान पर प्रत्येक कांग्रेसी को सूत कातना अनिवार्य हो गया था; तब कांग्रेस गांधी के नेतृत्व में चल रहा था। उन दिनों राजेंद्र प्रसाद, जवाहर लाल नेहरू जैसे बड़े-बड़े नेता सूत कातते थे। यदि इसका मूल्यांकन किया जाए तो हम पाते हैं कि खादी-जन को पॉलिटिक्स में मत पड़ो की बात मान कर खादी या अपना भाला किया हो ऐसा दिखता नहीं है। राजनीति में पकड़ होने से अच्छे कार्यकर्ता भी मिलते और वे समाज में काम भी लगन से करते ताकि जन-समर्थन और आदर मिले, किंतु आज खादी-जन को राजनीति में जाना अच्छा नहीं माना जाता। ऐसे में खादी में कर्मठ कार्यकर्ताओं की कमी होती गई है।

ख. "मैंने दो काम बताए हैं। आप लोग आचार्य कुल में शामिल हो जाओ और शांति सेना खड़ी करो। (विनोबा, 1981)"

उक्त के संदर्भ में प्रविणा ताई (पवनार आश्रम, वर्धा) साक्षात्कार में बताती हैं, "उस सभा में मैं भी थी। काफी उत्साह था, उस समय लोगों में। बहुतायत संस्थाएँ 'आचार्य कुल' पत्रिका के आजीवन सदस्य बने और बाद में भी आचार्य कुल के सभाओं में आते रहें किंतु एक दशक बाद इसमें कमी आने लगी आज तो समाप्त ही हो गया। रही शांति सेना की बात तो उसके लिए प्रयास तो हुआ किंतु सफल नहीं हो पाया। वैसे अलग-अलग लोग शांति सेना का प्रयास करते रहे। जैसे बिहार में रामजी सिंह, गुजरात में नारायण देसाई (अब वे स्वर्गावासी

हो गए) इसी तरह अन्य लोग भी आज प्रयास में लगे हैं।" इससे यह स्पष्ट होता है कि विनोबा का आचार्य कुल जो समाज को दिशा दिखाने का काम था उसमें शामिल न होकर या दूसरे शब्दों में कहें तो सामाजिक सरोकार के कार्यों से विमुख होकर खादी मुख्य उद्देश्यों से विमुख होती गई। दूसरी बात शांति सेना की रही तो इसमें कुछ सर्वोदयी लोग लगे हैं जिनका ताल्लुक खादी जनों से कम है। सर्व सेवा संघ और खादी-जगत दोनों गांधी से प्रेरित संस्था है, किंतु दोनों में समय के साथ तालमेल कम होते देखा गया है। दोनों संस्थानों से लोग ताल मेल का प्रयास करते हैं किंतु वह प्रयास नाकाफी साबित होता रहा है।

ग. "मैंने 'खादी-कमीशन' को सुझाया था कि वह खादी-मिशन बने। वह जब बनेगा तब बनेगा, लेकिन आपको सम्मिलित 'खादी-मिशन' बनाना चाहिए। (विनोबा, 1981)"

खादी-जगत ने विनोबा के कहने के दो माह बाद '2 अक्टूबर, 1981' को अधिकारिक रूप से 'खादी-मिशन' नामक संस्था बनी, जो आज तक चल रहा है। आज तक की सबसे बड़ी उपलब्धि है कि खादी-मिशन के बैनर तले भारत की सभी खादी संस्थाएँ खड़ी हैं। हालांकि यह कोई पंजीकृत संस्था नहीं है फिर भी भाईचारा के वास्ते साल में एक बार खादी-सभा में जरूर जुटते हैं (करोना महामारी के वजह से वैसी सभा नहीं हो पायी) जिसमें खादी से संबंधित समस्याओं पर चर्चा करते हैं और आगे की रणनीति तय करते हैं।

घ. "खादी-मिशन कैसे बने, उसमें कौन हो, यह मेरी तरफ से बाल* (बालविजय) कहेगा मेरी सलाह मिलती रहेगी। (विनोबा, 1981)"

---

* बाल यानी बालविजय भाई जो वर्तमान में खादी-मिशन के संयोजक हैं। आप आचार्य बिनोवा भावे के सहयोगी रहे।
आज वयोबृद्ध हो चले हैं और पवनार, वर्धा के आश्रम में रह रहे हैं। गांधीवादी बालविजय भाई 'प्रधानमंत्री एवं खादी ग्रामोद्योग आयोग' को अनेकानेक पत्र लिख कर खादी संस्थानों के खराब आर्थिक स्थितियों से परिचित करवाते रहे हैं।

उक्त कार्य को विनोबा ने बाल विजय भाई को सौंपा था वह आज भी खादी-मिशन के संयोजक बने हुए हैं। वे वयोवृद्ध हो चले हैं। वे बार-बार दूसरे लोगों को खादी-मिशन की जिम्मेदारी सौपने की बात करते है किंतु सभी लोग उन्हीं को जीवन पर्यंत संयोजक बने रहने की बात दुहराते हैं। उनके प्रति सब लोगों का विश्वास बना हुआ है। बालविजय भाई ब्रह्मचारी हैं और गांधी-विनोबा की परंपरा के हैं। अंततोगत्वा दिनांक 22 फरवरी, 2016 को बालविजय भाई ने एक पत्र (संदर्भ खा.मि./52/2015-16) के द्वारा खादी-मिशन के संयोजक पद से मुक्त होने की सार्वजनिक घोषणा की और वर्तमान सह-संयोजक श्री लोकेंद्र भारतीय को आगे का (अगले खादी-सभा तक) संयोजक पद संभालने का सुझाव दिए। श्री लोकेंद्र भारतीय नवयुवक हैं और बिहार खादी संस्थाओं से जुड़े हैं। बाद में पुनः बालविजय को ही संयोजक बनना पड़ा। लेकिन अब वह बहुत दिन तक जीवित नहीं रहेंगे ऐसे में किसे इसका नेतृत्व मिलता है और उसे कैसे आगे बढ़ाता है यह समय बताएगा।

ङ. "काका साहेब (कालेलकर) ने मंत्र दिया था, अ-सरकारी..... असरकारी। उस दृष्टि से काम करो। (विनोबा, 1981)"

उक्त काम विनोबा भावे ने 1981 में कहा था किंतु इतने दिनों बाद भी यह नहीं हो पाया। आज जब खादी संस्थाएँ सरकारी लफड़े में पड़ी हुई हैं, लोन बढ़ता जा रहा है, खादी संस्थानों की जमीन गिरवी रखी हुई है, कुछ ने लोन का रकम लौटा भी दिया तो भी गिरवी रखी जमीन का कागज हाथ नहीं आया।

यदि उसी समय विनोबा की बात मान ली गई होती तो शायद यह स्थिति नहीं आई होती। पिछले चार खादी-सभा में प्रत्यक्ष रूप देखा (2 वर्ष करोना को छोड़ कर) गया कि खादी संस्थाएँ 'खादी और ग्रामोद्योग आयोग (KVIC)' के नीतियों से परेशान हो कर उससे मुक्त होने की बात करते हैं किंतु उससे मुक्त नहीं हो पाते हैं। उसका

महत्त्वपूर्ण कारण सब्सिडी और पुराना कर्ज है, जिसने खादी संस्थाओं को पंगु बना दिया है।

च. "खादी-कार्यकर्ताओं को बीच-बीच में मिलते रहना चाहिए। कम से कम साल में एक बार तो मिलना ही चाहिए। यहाँ (पवनार) या सेवाग्राम में मिल सकते हैं। (विनोबा, 1981)"

विनोबा ने छठीं और अंतिम बात खादी-जन को वर्ष में एक बार मिलने को कहा था, वह आज भी अनवरत रूप से जारी है। यही मिलन का परिणाम है कि आज तक खादी-संस्थाएँ खादी-मिशन के बैनर तले एक है। बाल विजय भाई के अनुसार, खादी-मिशन ने देश भर के खादी संस्थाओं को एक किया। यह इसकी बड़ी उपलब्धि है।

बिनोवा ने उक्त 6 बात खादी जन से कही इसके बाद खादी-जन ने खादी-मिशन बनाने की प्रक्रिया तेज कर दी। उसी दिन प्रथम खादी-सभा का निवेदन (वर्ष 1981) खादी-जन के समक्ष रखा गया, जो विनोबा के बातो का ही विस्तार रूप था। वे निम्नलिखित हैं:-

i. खादी अहिंसा का प्रतीक बने। यह मिशन गांधीजी ने हमारे सामने रखा था। उसे मूर्तिमान बनाने का दृढ़ निश्चय हम सब मिलकर करते हैं।
ii. विनोबाजी ने सुझाया है कि खादी सेवकों का खादी-मिशन बनें। खादी-मिशन का स्वरूप तथा कार्य के बारे में सोचने के लिए एक समिति बनाई जाए।
iii. खादी संस्थाओं की जो संस्थागत व व्यावहारिक कठिनाईयाँ है उसे समझने के लिए तथा दूर करने के लिए समिति यथा योग्य प्रयत्न करे ऐसी प्रार्थना है।
iv. हमारे कार्य का दिशा-दर्शन के तौर पर विनोबाजी ने "अ-सरकारी असरकारी" यह काका साहेब कालेलकर का सूत्र हमें दिया। पंच शक्ति (जन शक्ति, विद्वजन शक्ति, सज्जन शक्ति, महाजन शक्ति और शासन शक्ति) सहयोग के द्वारा उस दिशा की ओर बढ़ने का हमारा प्रयत्न रहेगा।

v. 'ग्राम स्वराज्य' यह खादी-मिशन का लक्ष्य है। उस दृष्टि से खादी संस्थाएं अपनी क्षमता के अनुसार जिला प्रखंड या कम से कम एक गाँव दत्तक (गोद) लेकर ग्राम स्वराज्य की दृष्टि से कार्य करें।

vi. खादी-मिशन के कार्यान्वयन के लिए खादी वृत्ति का विकास आवश्यक है। वैसे मिशनरी तैयार करने का प्रयत्न भी सबके सहयोग से होना चाहिए।

vii. विनोबाजी कहते हैं खादी-कार्यकर्ता चुनाव की राजनीति से अलग रहे। हम मानते हैं कि खादी-मिशन के कार्य के हित में यह आवश्यक है। इसलिए हम तय करते हैं कि हम अपनी सारी शक्ति खादी तथा विधायक कार्य में केंद्रित करेंगे।

viii. हमारा कार्य तथा परस्पर आत्मीयता बढ़ाने की दृष्टि से हम सब मित्रों को बीच-बीच में मिलते रहना चाहिए। अलावा इसके प्रादेशिक स्तर पर भी मित्र-मिलन का आयोजन हो।

प्रथम खादी-सभा में खादी-मिशन का उद्देश्य बनाया गया था जो निम्नलिखित हैं:-

क. "ग्राम-स्वराज खादी-मिशन का लक्ष्य है। उसका साधन है सत्य और अहिंसा। यह ध्यान में रखकर खादी संस्थाएं अपनी क्षमता के अनुसार गाँव, ग्राम-समूह, प्रखंड या जिले में ग्राम-स्वराज्य की दृष्टि से कार्य करें।

ख. ऊपर निर्दिष्ट उद्देश्य के लिए जो समूह या संगठन कार्य करते हैं उनके साथ सहयोग करना।

ग. देश में खादी ग्रामोद्योग के कार्य की नीति निर्धारित करना और उसके अनुसार संस्थाओं को सलाह देना।

घ. खादी-संस्थाओं से सतत संपर्क रखकर उनकी संस्थागत तथा अन्य व्यावहारिक कठिनाइयाँ समझ कर उन्हें दूर करने का प्रयास करना।

ङ. मिशन के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए केंद्रीय एवं प्रादेशिक शासन, खादी ग्रामोद्योग कमीशन, स्टेट बोर्ड और अन्य

शासकीय और अ-शासकीय संस्थाओं से संपर्क कर उनका सहयोग और सहायता प्राप्त करना।

च. व्यक्ति, संस्थाएँ या समूह जो खादी-ग्रामोद्योग के माध्यम से समाज सेवा में लगे हैं उन सबको खादी-मिशन अपने परिवार का ही मानता है।

छ. कार्यकर्ताओं में खादी-वृत्ति जाग्रत हो और उन्हें मिशनरी स्पिरिट से कार्य करने की प्रेरणा मिले, उस दृष्टि से सेमिनार, प्रशिक्षण शिविर, रिफ्रेशर कोर्स आदि का आयोजन किया जाए।

ज. खादी ग्रामोद्योग संस्थाओं के कार्यकर्त्ताओं का अखिल भारतीय स्तर पर सम्मेलन, सभाएं आयोजित की जाएं और प्रादेशिक और क्षेत्रीय स्तर पर सभाएं आयोजित करने में सहयोग दिया जाए।

झ. मिशन का उद्देश्य ध्यान में रखकर खादी ग्रामोद्योग और समग्र विकास का कार्य प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से मिशन कर सकता है।

ञ. मिशन और उसके सेवक सत्ता पक्ष और चुनाव की राजनीति से अपने को अलग रखेंगे (खादी-मिशन, 2014, पृ. 9)।"

खादी-मिशन के उद्देश्य को पूरा करना अब के खादी आश्रमों से सम्भव नहीं है। इसका मुख्य कारण संस्थाओं की कमजोर आर्थिक स्थिति और कार्यकर्ताओं में खादी वैचारकी में दिनोदिन कमी है। हालांकि खादी आश्रमों ने अपना उद्देश्य नहीं बदला है, किंतु धरातल पर लाने के लिए त्याग, तपस्या और दृढ़ इच्छा शक्ति भी चाहिए। आज खादी संस्थाएँ लोगों में खादी विचार का बीज वपन नहीं कर पा रही है। लोग खादी फैशन के वास्ते पहन रहे हैं न कि खादी विचार से प्रभावित हो कर। फैशन ऐसा रोग है जो नित्य बदलता रहता है। लोगों में ऐसी स्वदेशी भावना पैदा करनी पड़ेगी जिससे लोग मिल के कपड़ा पहने में परहेज करें। गौरतलब है कि गांधी दर्शन में 'चीनी से गुड़ अधिक स्वदेशी है,' जो अपने ही देश में बनता है।

खादी-सेवक की आचार-मर्यादाएं

"महात्मा गांधी ने खादी-ग्रामोद्योग को अहिंसा का प्रतीक कहा है। अहिंसक जीवन दर्शन का प्रारंभ खादी-ग्रामोद्योग से होता है। हमारे खादी सेवक इस नए विचार के समर्थ वाहक बनें इस दृष्टि से हमारी आचार-मर्यादाएं निर्धारित होनी चाहिए। "अंतः शुद्धि बहिः शुद्धि श्रमःशान्ति समर्पणम्" यह हमारा मर्गदर्शक सूत्र रहे।

I. प्रार्थना: सर्वधर्म प्रार्थना दैनिक जीवन का अंग बने। व्यक्तिगत और सामाजिक दृष्टि से इसका महत्त्व है। परिवारों में, भंडारों में, उत्पादन केंद्रों में प्रवृत्ति का प्रारंभ प्रार्थना से हो। माह में कम से कम एक दिन ग्रामवासी या नागरिकों के साथ सामूहिक प्रार्थना का आयोजन हो।

II. सफाई: खादी-सेवक का परिवार, कार्यालय, केंद्र बिक्री केंद्र, उत्पादन केंद्र आदि सभी सफाई के प्रतीक रूप आदर्श केंद्र बनें। हम स्वयं सफाई का कार्य करें। स्वच्छता का निरंतर ध्यान रखा जाए।

III. कताई: खादी सेवक के परिवार में व्यक्तिगत और सामूहिक कताई, सुनिश्चित होनी चाहिए। कताई भले ही तकली से हो, परंपरागत चरखे या अंबर चरखे से हो खादी सेवक के जीवन में व्रतरूप प्रतिष्ठित हो। परिवार और संस्था में खादी और ग्रामोद्योग की वस्तुओं का उपयोग हो।

IV. स्वाध्याय: हमारी निष्ठा, विचार-परिवर्तन द्वारा समाज-परिवर्तन में है। विचारों में निरंतर विकास स्वाध्याय द्वारा ही हो सकता है। नित्य स्वाध्याय खादी सेवक के जीवन का अंग बने। 'मंगल प्रभात' का सतत चिंतन मनन हो और अनुसरण करने का प्रयत्न हो।

V. सार्वजनिक सेवा: हमारे खादी सेवक सार्वजनिक कार्यकता हैं यानी जन-सेवक है। यद्यपि उनका नित्य कार्य खादी-ग्रामोद्योग का है, लेकिन राष्ट्रधर्म के रूप में उनका नैमित्तिक धर्म भी है इसलिए बाढ़, सूखा, अकाल, दुर्घटना, साम्प्रदायिक दंगे आदि के

सेवा कार्यों में तत्परता से जुट जाना सेवक की सहज वृत्ति बननी चाहिए, ऐसी सार्वजनिक सेवा का हम संकल्प करें।

VI. विश्वस्त वृत्ति: हमारी संस्थायें 'ट्रस्ट हैं। हमारी भूमिका ट्रस्टी की है, विश्वस्त की है। ट्रस्ट का उद्देश्य सार्वजनिक सेवा है, इसलिए हितग्राही कत्तिन, बुनकर, कारीगर, ग्राहक और आम जनता है। खादी सेवक इनके हितों के रक्षक हैं, ट्रस्टी हैं। हमारे जीवन व्यवहार में ट्रस्टीशिप का भाव सहज प्रकट हो ऐसा हम संकल्प करें (खादी-मिशन, 1991, पृ. 10)।"

खादी मिशन उपर्युक्त खादी सेवक की आचार-मर्यादायें तो आदर्श स्थापित की है किंतु इसका क्रियान्वयन नहीं हो पा रहा है, जिसका प्रमुख कारण खादी कर्मी के प्रशिक्षण का अभाव। एक समय था जब खादी आश्रमों में आने से पहले आचार व कार्य व्यवहार का प्रशिक्षण लेना पड़ता था। अब न तो वो प्रशिक्षण संस्थान बचे और न ही प्रशिक्षण पाने वाले लोग। तब खादी आश्रमों में काम करने से सम्मानजनक जीवकोपार्जन हो जाया करता था। अब आर्थिक तंगी में दिन गुजार रहा है।

खादी रक्षा अभियान

खादी मिशन 2010 से खादी रक्षा अभियान चला रहा है, उसमें सबसे महत्त्वपूर्ण बात ऋण मुक्ति की है। यदि 'खादी और ग्रामोद्योग आयोग' खादी संस्थाओं की 2408.02 करोड़ रुपये का ऋण माफ कर दे तो खादी संस्थाओं में एक बार फिर जान आ जाएगी। सरकार के वित्त मंत्रालय एक्स्पेंडीचर ग्रुप और IIBF की रिपोर्ट यह स्पष्ट कर चुकी है कि संस्थाओं को ऋण भार से मुक्त किया जाए।

भारत सरकार ने उत्तर प्रदेश हैण्डलूम बुनकर 3884.00 करोड़ रुपये माफ किया है (खादी-मिशन, 2014)। खादी संस्थाएँ भी कत्तिन बुनकर कार्यकर्त्ता कामगारों को रोजगार सृजन का कार्य करती है। सोसायटीज एक्ट के तहत पंजीकृत है तथा ट्रस्टीशिप आधारित है, किसी का व्यक्तिगत लाभ/हित नहीं है। अतः कत्तिन-बुनकर, कार्यकर्ताओं के हित में तथा रोजगार कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक

कार्यांवित करने हेतु खादी संस्थाओं को ऋण भार से तुरंत मुक्त किया जाना चाहिए।

यह पूरी राशि संस्थाओं के नाम नहीं है, इस राशि में व्यक्तिगत कारीगरों, खादी बोर्ड को पुनर्वित्त करने के लिए और संस्थाओं को कार्यकारी पूँजी तथा पूँजीगत ऋण के लिए दी गई राशियाँ शामिल हैं। संस्थाओं को कार्यकारी पूँजी के रूप में दी गई राशि में से अधिकतम राशि आयोग तथा बोर्डों द्वारा रिबेट की रकमों का देरी से भुगतान करने की प्रक्रिया के कारण है। यह अनावश्यक कटौतियों और अनावश्यक ब्याज की रकमों के भुगतान की प्रक्रिया में तथा पुराने पैटर्न ऑफ असिस्टेंस के कारण मुद्रा स्फीति एवं आयोग द्वारा संचालित खादी भवनों द्वारा संस्थाओं को समयानुसार रकमों का भुगतान न करने की प्रक्रिया में फँस गई। शेष राशि का उपयोग समाज के सबसे निम्नतम और निर्धनतम वर्गों को रोजगार देने में उपयोग हो गया, इसलिए इस मद में जो ऋण दिखाया गया है, वह केवल आयोग की किताबों में ही है, खादी जगत के पास वास्तव में इस मद में कोई राशि नहीं है।

निष्कर्ष

खादी मिशन अपने आपमें कुछ नहीं है। इसकी शक्ति खादि संस्थाएँ हैं। खादी संस्थानों का दायित्व बनता है कि खादी-मिशन को और अधिक सशक्त बनायें, जो संस्थान सरकारी लालच में आकर आंदोलन से बाहर रहते हैं; उनसे मिल बैठ कर उन्हें भी आदोलन में शामिल करें। आज खादी-मिशन के बैनर तले खादी संस्थायें अपना अहिंसक आंदोलन चला रही हैं, जो कि जायज मांग है। अतः खादी और ग्रामोद्योग आयोग को चाहिए कि उक्त बातों को संज्ञान में लेते हुए यथा शीघ्र ऋण माफ करें; तभी खादी संस्थायें आर्थिक रूप से मजबूत हो पाएँगी। यदि हम गौर से देखें तो खादी ऐसा क्षेत्र है जिसमें लोगों को बिना विस्थापित किए और कम लागत में रोजगार मिल सकता है। आज भी खादी एक वस्त्र नहीं है, इसमें ऐसी शक्ति व संस्कृति छुपी है जो भारत के गांवों को सशक्त बना सकती है। इस

शक्ति को भान कराने वाले गांधी-विनोबा के बाद कुछ खादी जन बचे थे किंतु अब ऐसे पुरुष न के बराबर हैं।

दूसरी तरफ खादी में छोटे किंतु कारगर तकनीक की जरूरत है, जो नहीं बन पा रहे हैं। खादी-जनों में भी उन्नत तकनीक को अपनाने और विकसित करने की इच्छा शक्ति कम ही दिखाई देती है, जिससे दिन प्रति दिन संस्थाएँ कमजोर होती जा रही हैं। यही कारण है कि खादी संस्थाएँ 'सरकारी सब्सिडी छोड़ने' की बात प्रत्येक खादी-सभा में कहती हैं; कुछ संस्थाएँ कुछ दिन करती भी हैं लेकिन अधिक दिन नहीं चल पातीं। 'मंगन संग्रहालय समिति, वर्धा' ऐसी खादी संस्था है जो आज तक सरकारी सब्सिडी नहीं ली फिर भी लाभ में रहती हैं। इससे स्पष्ट होता है कि सब्सिडी के वजह से खादी संस्थाएँ गर्त में जा रही है, क्योंकि सब्सिडी के वजह से भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा है, जो भ्रष्टाचार में शामिल नहीं है वैसी संस्थाएँ कम ही बची हैं। गौर करने की बात यह है कि खादी संस्थान कम हो गईं किंतु उत्पादन और बिक्री बढ़ गया। यानी भ्रष्टाचार ने मील के कपड़े को खादी बना दिया है। इसमें कुछ सरकारी अधिकारी और कुछ खादी संस्थान संलिप्त हैं। हमें खादी ऐसी संस्थानों खरीदनी चाहिए जिसके उत्पादन केंद्र हो यानी हम भी 'खादी-मिशन' के अंग बन जाएँ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

खादी-सभा. (1981 सितंबर/ 2013, मार्च). प्रथम खादी-सभा निवेदन. जयपुर : *खादी-मिशन समाचार.*

खादी-मिशन (1991/2013). खादी सेवक की आचार-मर्यादाएं. जयपुर : *खादी-मिशन समाचार.*

खादी-मिशन. (2014). *खादी-सभा विशेषांक.* खादी-मिशन सेवा ट्रस्ट वर्धा: लेखक.

खादी-मिशन. (2014, सितंबर). उद्गम एवं उद्देश्य. जयपुर : *खादी-मिशन समाचार.*

विनोबा. (1981 सितंबर/ 2013, मार्च). खादी-सभा का उद्घाटन भाषण. जयपुर : *खादी-मिशन.*

सिंह, पी. के. (2016). *खादी : एक विचार.* वाराणसी : काशी योग एवं मूल्य शिक्षा संस्था.